Dr.Raman Kumar thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics, D.B.College, Jaynagar, Madhubani.

Class:-B.A.Part-1(Hons.)Paper-2nd.Date:-19.08.2020. Lecture n.-18.

Topic:- पूर्ति (Supply)

:- पूर्ति का अर्थ अक्सर वस्तु की उस मात्रा से लिया जाता है जो कि उत्पादकों के पास स्टॉक के रूप में उपलब्ध होती है। उसमें से वस्तु की विक्रय की गई इकाइयों को निकालने के बाद वस्तु का स्टॉक ज्ञात किया जाता है। दूसरे शब्दों में बाजार में बेची गई अन्य वस्तु की मात्रा वस्तु के कुल स्टॉक से सदैव कम होती है। पूर्ति का संबंध सदैव वस्तु की कीमत के साथ होता है।

* वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक(Factors Determining Supply of a Commodity) एक वस्तु की पूर्ति अनेक कारको से प्रभावित होती है। इसमें से प्रमुख निर्धारक तत्व निम्नलिखित है:-

1). वस्तु की कीमत(Price of the Commodity) :- वस्तु की पूर्ति को निर्धारित करने वाला सबसे प्रमुख कारक वस्तु की कीमत है। वस्तु की कीमत जितनी अधिक होगी उतनी ही अधिक मात्रा में उत्पादक वस्तु की पूर्ति करेंगे।

2) संबंधित वस्तुओं की कीमतें (Price of Related Goods):-एक वस्तु की पूर्ति इनकी संबंधित वस्तुओं की कीमत और विशेष रूप से प्रतिस्थापन वस्तुओं की कीमतों पर निर्भर करती है।

3) उत्पादन के साधनों की कीमतें एक वस्तु की पूर्ति है उत्पादन के साधनों की कीमत पर निर्भर करती है यदि एक वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त साधनों की कीमतें बढ़ जाती है तो वह वस्तु की कुल उत्पादन लागत भी बढ़ जाएगी।

4) तकनीकी ज्ञान का स्तर(Stage of Technology Knowledge):-समय के साथ तकनीकी ज्ञान में भी परिवर्तन होते हैं। नए अनुसंधानो तथा पर्वतनो (innovations) से उत्पादन की विधियों में सुधार होता है। तथा वस्तु की पूर्ति बढ़ती है।

5) पूर्ति के नियम (Law of Supply) :- पूर्ति का नियम वस्तु की कीमत और वस्तु की पूर्ति के संबंध को व्यक्त करता है कीमत तथा पूर्ति में प्रत्यक्ष संबंध होता है। कीमत में वृद्धि उत्पाद को को एक वस्तु की पूर्ति बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है तथा कीमत में कमी पूर्ति में कमी करने के लिए बाध्य करती है। यदि कीमत बहुत कम हो जाती है तो उत्पादन एवं विक्रेता वस्तु की बिल्कुल भी पूर्ति नहीं करेंगे। जिस कीमत से

नीचे कीमत पर विक्रेता वस्तु की पूर्ति के लिए तत्पर नहीं होते उसे रक्षित कीमत (Reserved price) कहा जाता है।

6) पूर्ति अनुसूची तथा पूर्ति वक्र(Supply Schedule and Supply Curve):- पूर्ति अनुसूची एक निश्चित समय पर बाजार में एक वस्तु की कीमत एवं पूर्ति के संबंध को व्यक्त करती हैं। यह अनुसूची बतातीं है कि विभिन्न कीमतों पर वस्तु की कितनी मात्रा की पूर्ति की जाएगी। पूर्ति अनुसूची दो प्रकार की होती है:-

A). व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची तथा

B). बाजार पूर्ति अनुसूची.